Item Code: 952 തിയ്യതി..... Participant Code: 037

जीत की शहद

ठंडी हवाँ तेज़ ~~चल~~ चल रही थी। खिड़की से सुबह की नन्ही धूप की टुकड़े उसके चेहरे पर पड़ी। लेकिन इससे कई समय पहले ही उसने नींद से जागी थी। इस मोहल्ले में वह कैसे सो सकती थी? सन्नाटे की कुछ घंटे उसको शांती दी होगी। तभी दरवाज़े की खुलने की आवाज़...

"तुम जागी हो?" उसकी माँ, सूसन, पूछी।

"नहीं तो... ह... मतलब... मैं जागी हूँ, लेकिन अभी-अभी जागी हूं।" उसने बोली।

"मुझसे झूठ मत बोलो, लूसी।" सूसन धीमी-धीमी चलकर लूसी के पास बैठी। "मैं तुम्हारी माँ हूँ। मैं तुम्हारी आँखें देखकर जान सकती हूँ कि तुम सोई नहीं हो।"

"मेरी गलत है, माँ", लूसी को पछतावा हुआ।

"सुनो बच्ची, तुम मेरी ज़िक्र मत करो। मैं तुम्हें जीतते देखना चाहती हूँ, डरते देखने नहीं। तुम वह परीक्षा लिखो और तुम्हारी अर्हित जीत पाओ।"

कई दिन पहले की बात है। लूसी की पाठशाला में एक स्कोलरशिप परिक्षा होने की उद्घोषणा हुई। प्रथम पुरस्कार पाने वाला को पाँच लाख रुपये की प्रशस्ति मिलेगा। लूसी पढ़ाई में बहुत अच्छी थी। इतनी अच्छी कि वह इस परीक्षा में आसानी से

प्रथम पुरस्कार पा सकती हैं। वह इस परीक्षा में भाग लेने की तैयारी की। उसकी सहेलियाँ, अध्यापिकाएँ, माँ; सभी उसकी जीत के लिए उत्सुक थे। लेकिन उसकी कक्षा की एक लड़का ऐसे नहीं था। विक्टर।

विक्टर एक ऐसा बच्चा था जो सोचता है कि पैसा ही सब कुछ है। वह एक अमीर परिवार का लड़का है। वह सोचता है कि सब कुछ पैसे से खरीदा जा सकता है। उसे सच्चाई, प्यार, आदर आदि मूल्यों की महत्व के बारे में कुछ नहीं पता। समस्या यह है कि जिस घर में लूसी और सूसन रह रहे हैं वह घर विक्टर की पिता की है।

एक दिन पाठशाला से घर आते वक्त लूसी को विक्टर ने रास्ते में रुकवाया।

"सुनो लूसी, मैं जो बात कहने जा रहा हूँ उसे अच्छे से सुन लो। दो हफ्तों में जो परिक्षा हो रही है, उसमें तुम्हें भाग नहीं लेना है।"- विक्टर दृढ़ स्वर से कहा।

"क्यों नहीं?"

"क्योंकि उस में मुझे प्रथम पुरस्कार मिलना है"। विक्टर की आवाज में कठोरता और रोष भरा था।

"तुम्हारा जीत को मेरी भाग लेने से क्या संबंध? तुम्हें जीतने के लिए तुम्हें भाग लेना है। मेरी भाग लेने और भाग नहीं लेने से

क्या फरक पड़ता है?"

"तुम्हें अच्छी तरह पता है कि उससे क्या फरक पड़ता है। मैं जो कह रहा हूँ उसे करना तुम्हारे लिये अच्छी होगी। वर्णा..." विक्टर धमका देने लगा।

"वर्णा क्या?"

"अगर तुम मेरी बात सुनी नहीं तो मैं मेरे पापा से बोलकर तुम्हें और तुम्हारी माँ को उस घर से निकालूँगा। विक्टर ज़ोर से कहा।

लूसी की दिल एक क्षण के लिए रुक गया। वह धीरे-धीरे चलने लगी। पीछे से विक्टर कुछ चिल्ला रहा था। लेकिन लूसी वह सुन नहीं सकती। उसकी कानों में विक्टर की 'उन' शब्दों गूँज रहे थे।

वह घर पहुँची और सीधे उसकी पिता की तसवीर के पास जाकर रो पड़ी।

"अब मैं क्या करूँ, पापा? मैं किसको सुनूँ- मेरी दिल की या विक्टर की? मैं यह कैसे सहूँ? काश आप यहाँ होते।" उसकी आँसू की समुद्र में उसकी आवाज़ डूब गयी।

वह सूसन से सारी बात बताई। सूसन बिना सोचे बोली- "कुछ भी हो बेटी, तुम्हें परीक्षा लिखना ही होगा। मैं तुम्हें हारते नहीं, जीतते देखनी चाहती हूँ।"

"लेकिन म... माँ...।"

"लेकिन वेकिन कुछ नहीं। तुम वह परीक्षा लिख रही हो मतलब लिख रही हो।" सूसन दृढ़निश्चय से बोली।

सूसन की यह मन लूसी को कुछ शक्ति दी। वह परीक्षा लिखना शुरु की। वह परीक्षा के लिए तैयार होने शुरू की। उसके पास बस एक हफ्ता बची थी। लेकिन लूसी के लिए वह काफी थी।

परीक्षा की दिन आ पहुँची। विक्टर गांभीर्य और गर्व से परीक्षा के लिए आ पहुँचा। उसे वहा लूसी को दिखाई नहीं दिया तो उसको अच्छा लगा। परीक्षा शुरू होने से दस मिनट पहले लूसी वहाँ पहुँची। उसकी चेहरा देखकर विक्टर चकित हुआ।

"तुम यह क्या कर रहे हो?" विक्टर क्रोध से पूछा।

"दिखाई नहीं दे रहा हैं क्या? परीक्षा लिखने आई हूँ।"

"लेकिन मैंने तुम्हें मना किया था न?" विक्टर की गुस्सा बढ़ रही थी।

"वह तो है। लेकिन मैं तुम्हारी क्यों सुनूँ? तुम्से हारना मेरेलिए मंज़ूर नहीं"।

"तुम बहुत बडे गलती कर रहे हो"- विक्टर ने चेतावनी दिया।

"मुझे कोई पर्वा नहीं। मैं जीतने जा रही हूँ।"

परीक्षा समाप्त होते लूसी अपनी माँ की पास गयी। लूसी की, खिला गुलाब की तरह की चेहरा देखकर सूसन की चेहरे में सूरज की उदय हुआ।

Item Code: 952 Participant Code: 037

"मुझे पूछने की जरूरत नहीं कि परीक्षा कैसी थी। सब मैं तुम्हारे चेहरे से पढ़ सकती हूँ"

यह सुनकर शहद जैसे मधुर हँसी लूसी की मुँह में आ छपकी। लूसी की सूखी-रूखी दिल में एक तूफान बरस लिया।

जैसे सोचा था वैसे ही लूसी को प्रथम पुरस्कार और पाँच लाख रुपये मिल गये। इस पैसा और कुछ अच्छी लोगों की मदद से वह माँ और बेटी एक नया घर खरीदे। हार ना मानने की मीठा फल अब लूसी कभी नहीं भूलेंगी। क्योंकि जीत की शहद की मधुरता कुछ और ही है।